

XLIII.

Ó| pâs| trōp ē| ka|r̄ēs ! ó| pan| s̄ers| pron| s̄ă| me| tron| pér !
ó| rē te| nan| te| mē| mœ̄r', ó| vi| o| lan| te| fu|r̄er !
ó| ni| se| ke|r̄ē| fl̄ēt ! ó| trōp| puis| san| te| v̄l̄on| te !
ó| īes,| non| plūs īes,| s̄or| se| ju| mē| le| de| plers !
5 ó| pa| re| mant| d̄e-| fr̄on| s̄o| no|r̄ēs ! ó| plan| te,| le| j̄er| don,
ó| l'an| sé| ne| de| pris| p̄s̄r| l'ū| n'| ē| l'ō| tre| val| ler !
ó| vi| vre| pléin| de| d̄s̄| lēs ! ó| d̄s̄| s̄' er| rer| ki| me| p̄ē| dis
P̄s̄r| j̄ē| t̄er| le| rē| poos| dan| la| fo|r̄et| de| tra| vat !
ó| fa| se| b̄ē| l', x| A| m̄s̄r| to| n̄| ē| pron| tu| a| poos| te| z̄| ē| ton| moors,
10 Dont| tu| me| p̄œin| s̄| ē| me| tiens| san| ke| je| puis| se| ru| ér !
ó| jan| t̄i| s̄| a| m̄s̄| rēs̄| ēs̄| pris,| mon| a| van| tu| re| v̄ēi| és :
An| k̄ē| le| p̄ē| ne| l'a| m̄s̄| d'u| ne| re| b̄ē| le| me| tiént !